शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० – पत्र

जयद्रथ-वध खण्ड काव्य — भावार्थ
कवि- मैथिलीशरण गुप्त

" आते बुरे दिन बीतने पर मनुज के जग में जहाँ,
जाते हुए कोई न कोई दुःख दे जाते वहाँ।
अतएव अब निश्चय तुम्हारे उदय का आरम्भ है,
होगा अधिक अब दुःख क्या? यह सब दुखों का स्तम्भ है।"

भावार्थ:-

भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन को सांत्वना देते हुए कहते हैं कि इस संसार की बड़ी अद्भुत गति है। इस संसार में प्रत्येक मनुष्य के बुरे दिन आते हैं। इसके साथ ही बीतने पर वे दिन भी इस संसार में लोगों को जाते-जाते कोई न कोई दुःख अवश्य ही दे जाते हैं। अतएव अब तुम यह निश्चय पूर्वक जान लो कि तुम्हारे दुःखों का अन्त होने का समय आ गया है। इस दुःख से अधिक क्या कोई और दुःख हो सकता है। पुत्र शोक को संसार का सबसे बड़ा दुःख कहा गया है। यह दुःख ही सब दुःखों का स्तम्भ है।

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि कहना चाहता है कि इस मानवीय संसार में पुत्र शोक से बढ़कर कोई दूसरा दुःख नहीं है। परन्तु सामान्य जीवन में दुःखों का अन्त होता है। इसलिए समस्त मानव को धैर्य से काम लेना चाहिए।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०ब्र० सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ
06/08/20

शास्त्री द्वितीय खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

'पथिक' काव्य खण्ड

कवि - श्री रामनरेश त्रिपाठी

Date ——— Page ———

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न :- मानवीय संसार के सन्दर्भ में कवि का क्या कहना है?

उत्तर :- कवि इस सत्य को खुले मन से स्वीकार करता है कि संसार में दुःख और मुसिबतों की अधिकता है। विपदाओं के उलझे जाल में यहाँ का प्रत्येक व्यक्ति कराहते रहता है। दुःख की अधिकता में हमारा जीवन और हमारी बुद्धि विकल और विह्वल रहती है। दारूण दुःखों से घबड़ाकर एकान्त साधन के लिए जंगल में मंगल रचाता है, वह स्वार्थी समझा जाता है। ऐसे लोग अपने कल्याण कामना के लिए सचेष्ट हैं। इसीलिए उनका आदर्श मान्य नहीं है। आज गीता के कर्मवादी दर्शन की आवश्यकता है। मुनि पथिक को जिन उपदेशों का पाठ पढ़ाते हैं वे वर्तमानयुग के लिए उपयुक्त है और आधुनिक विचारकों को मान्य है। लेकिन मुनि के उपदेश उन्हीं व्यक्ति के हृदय में घर कर सकते हैं जिनकी बुद्धि आस्तिक है, जिन्हें ईश्वर की शक्ति, सत्ता और स्थिति में पूर्ण विश्वास है।

प्रश्न :- कवि मातृभूमि के प्रति कर्त्तव्य की भावना को किस रूप में प्रकट करता है?

उत्तर :- समाज-सेवा देश-प्रेम का प्रथम सोपान है। राष्ट्र सेवक होने के पहले समाज-सेवक होना चाहिए। जिस देश की भूमि पर हमलोग रहते हैं, जिसका अन्न खाकर, जल पीकर हम बड़े हुए हैं, उसके प्रति भी हमारा कुछ कर्त्तव्य है। अतः हमें अपने प्यारे देश की पूरी सेवा करनी चाहिए। परन्तु हमारा देश-प्रेम इतना संकुचित न हो कि हम दूसरे देशों का शोषण करने लगें। हमारी नीति आक्रमक नहीं होनी चाहिए। हमारा तो यह कर्त्तव्य होना चाहिए कि स्वयं जीयें और दूसरों को भी जीने दें। जब तक हमारे अन्दर विश्व भावना न जगेगी तब तक हम विश्व से प्रेम करना नहीं सीखेंगे। इसलिए आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने दृष्टिकोण को व्यापक बनावें। हम अपने देश से प्रेम करें और विश्व के अन्य देशों से भी प्रेम करना सीखें।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० ऊ० सं० महावि० सुलसेका, पूर्णियाँ

06/08/20

एक लड़के को मोरी मे ढकेल दिया, एक खोमचे वाले का खोमचा उलट दिया। एक कुत्ते को पत्थर से मारा और स्नान कर आती एक वैष्णवी से टकराकर अँधे की उपाधि पाई। अतः हम कह सकते हैं कि वह कुछ समय के लिए मानसिक संतुलन खो दिया था।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०क०सं० महावि० सुरखसेना, पूर्णियाँ
06.08.20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ०द्वि०-पत्र
दिगंत-भाग-2 गद्य खण्ड
शीर्षक :- उसने कहा था
लेखक : चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

प्रश्न :- लहना सिंह का परिचय अपने शब्दों में दें।

उत्तर :- लहना सिंह सिक्ख राइफल्स में जमादार है। वह बचपन से ही साहसी था। जब सूबेदारनी बालिका थी तब वह उसे तेरी कुड़माई हो गयी! कह कर छेड़ा करता था। एकबार उसे तांगे से कुचलने जाने से बचाया था। छेड़-छाड़ में ही वह सूबेदारनी से प्रेम करने लगा था। तभी तो वह कुड़माई की बात सुनकर वह विचलित हो गया था।

वह साहसी के साथ बुद्धिमान भी था। नकली लपटन साहेब की जानकारी वह प्राप्त कर लेता है। वह तत्कालीन स्थिति को भाँपकर सूबेदार को लौटाने के लिए वजीरा सिंह को भेजता है। इससे न केवल सूबेदारनी की रक्षा होती है अपितु सैनिक भी कम ही संख्या में हताहत होते हैं। वह जंग जीत जाता है। इस जीत का सारा श्रेय जमादार लहना सिंह की समझदारी को ही दिया जाता है।

लहना सिंह निष्ठावान प्रेमी है। सूबेदारनी उसकी पत्नी नहीं बन पाती है। परन्तु जब वह अपने पति और पुत्र की भीख माँगती है तो लहना सिंह युद्ध के मैदान में अपने वचन का पालन करता है। इससे उसके त्यागमय और सच्चे प्रेम का प्रमाण मिलता है। इस तरह अपने तीन गुणों वचन का पक्का, आदर्श प्रेमी और वीरता के लिए वह हिन्दी कहानी का चिर स्मरणीय पात्र है।

प्रश्न :- कल, देखते नहीं यह रेशम से कढ़ा हुआ सालू' यह सुनते ही लहना सिंह की क्या प्रतिक्रिया हुई?

उत्तर: यह सुनते ही लहना सिंह अपने घर की ओर जाने लगा। मगर प्रेम की विफलता से निराश और मानसिक कष्ट के कारण उसने रास्ते में

शेष आगे-